लघु कहानी / बाबा और फ़क़ीर

(यह कहानी फ्रांसीसी प्रबोधन काल के महान दार्शनिक वोल्तेयर ने 1750 में लिखी थी ! यह समय था जब पुर्तगाली, अंग्रेज़, डच और फ्रांसीसी कम्पनियाँ भारत पर अपने उपनिवेशवादी प्रभुत्व के लिए संघर्ष कर रही थीं ! उस समय पूरे यूरोप में भारत के साधुओं, तांत्रिकों, अवधूतों, कापालिकों, योगियों, संपेरों आदि के बारे में, योग-ध्यान और अघोरी क्रियाओं, योनि और लिंग की पूजा, शमशान-साधना आदि के बारे में रहस्य-रोमांच भरी कहानियाँ खूब चलन में थीं। वोल्तेयर, दिदेरो, रूसो, मौन्तेस्क्यू आदि प्रबोधनकालीन दार्शनिक इस चलन के खिलाफ़ थे, क्योंकि वे वैज्ञानिक टेम्पर, तर्कणा और जीवन के प्रति भौतिकवादी नज़रिए के पक्षधर थे। इसीलिए, जब फ्रांसीसी कुलीनों और बौद्धिकों के बीच भारत के साधुओं-तांत्रिकों-कापालिकों-अघोरियों आदि-आदि की कहानियों के ज़रिये भाववादी-रहस्यवादी दृष्टिकोण को बढ़ावा दिया जा रहा था तो प्रबोधनकालीन दार्शनिकों ने इसके ख़िलाफ़ मोर्चा लिया।)

मैं गंगा के किनारे बनारस शहर में था जो ब्राह्मणों की पुरातन भूमि थी ।मैंने जमकर अध्ययन किया। मैं हिन्दी अच्छी तरह से समझने लगा था । मैंने ढेर सारी बातें सुनीं और हर चीज़ दर्ज़ कर ली। मैं अपने दोस्त ओम के साथ रुका हुआ था।

वह एक ब्राह्मण था, और जितने लोगों को मैं अबतक जानता था, उनमें सबसे अधिक योग्य था।

एक दिन हम एक साथ एक मंदिर में गए। वहाँ हमने कई सिद्ध संतों को देखा। जैसा कि सर्वविदित है, उन्होंने संस्कृत नामक भाषा का अध्ययन कर रखा था जिसमें एक पवित्र पुस्तक लिखी गयी थी जिसे वे वेद कहते थे।

मैं एक सिद्ध पुरुष के सामने से गुज़रा जो उसी पवित्र पुस्तक का अध्ययन कर रहा था।

वह चीखा,ओ नीच अधम नास्तिक ! तुम्हारे कारण मैं उन स्वरों की संख्या भूल गया जो मैं गिन रहा था ।तुम्हारे कारण अब मरने के बाद मेरी आत्मा एक खरगोश के शरीर में जायेगी जबकि मुझे पूरी आशा थी कि यह एक तोते के शरीर में जायेगी।

उसे शांत करने के लिए मैंने उसे एक रुपया दिया।

वहाँ से कुछ ही कदम आगे बढ़ते दुर्भाग्यवश मुझे छींक आ गयी जिससे एक योगी जाग गया जो समाधि की अवस्था में था।

मैं कहाँ हूँ, वह चीखा,कैसी विपदा है ! मैं अपनी नाक की नोक नहीं देख पा रहा हूँ ! दिव्य ज्योति विलुप्त हो गयी है !

अगर मेरे कारण ऐसा हुआ है कि आप अपनी नाक की नोक नहीं देख पा रहे हैं तो इस नुकसान की भरपाई के लिए यह लीजिये एक रुपया ! अब आप अपनी दिव्य ज्योति के पास वापस चले जाइए, मैंने योगी महाराज से कहा।

मेरा मित्र ओम फिर मुझे सबसे प्रसिद्ध सिद्ध पुरुष की गुफा में ले गया जिसे लोग बाबा कहते थे ।वह बन्दर की तरह अलफ़ नंगा था और उसके गले के इर्द-गिर्द एक ज़ंजीर लिपटी हुई थी जिसका वज़न कम से कम साठ पौण्ड था।

वह एक कुर्सी पर बैठा हुआ था जो कीलों से भरी हुई थी और कीलें उसके चूतड़ों में धँसी हुई थीं ! बहुत सारी स्त्रियाँ आकर उससे परामर्श ले रही थीं ।उसकी बात हर परिवार के लिए भविष्यवाणी थी और उसका सम्मान बहुत अधिक था।

ओम की उससे बहुत लम्बी बातचीत हुई।

ओम ने पूछा, स्वामीजी, क्या आपको विश्वास है कि सात जीवनों और आत्मा के सात कायान्तरणों के बाद मैं ब्रह्मलोक निवास का अधिकारी हो जाऊँगा ?

यह इस बात पर निर्भर करता है कि तुम कैसा जीवन बिताते हो!--बाबा ने कहा।

मैं एक अच्छा नागरिक, एक अच्छा पति, एक अच्छा पिता और एक अच्छा मित्र होने के लिए सतत प्रयास करता हूँ ।मैं गरीबों को रुपये-पैसे से मदद करता हूँ और पड़ोसियों के साथ शान्ति-सौहार्द्र बनाए रखता हूँ ।-ओम ने कहा!

बाबा ने पूछा,क्या तुम कभी-कभी अपने चूतड़ों में कीलें धँसाते हो ?

नहीं स्वामीजी, कभी नहीं, ओम ने उत्तर दिया।

मुझे खेद है ! तब तुम कभी भी ब्रह्मलोक तक नहीं पहुँच सकते ! -बाबा ने कहा !

मोदीजी के आईआईटी और एम्स

मोदी जी का IIT वाला ट्वीट चर्चा में है जिसमे वे कह रहे हैं कि आज़ादी के इतने वर्षों के बाद भी साल 2014 से पहले तक देश में 16 IIT थे. लेकिन बीते 6 साल में औसतन हर साल एक नया IIT खोला गया है. इसमें एक कर्नाटक के धारवाड़ में भी खुला है. अब इसकी सच्चाई बहुत से लोग बता रहे है कि मोदी जी द्वारा खोले गए IIT की असलियत क्या है यहां हम IIT की बात नही करेंगे यहाँ हम बात करेंगे एम्स की.....क्योंकि नरेंद्र मोदी सरकार के आने के बाद जिन एम्स की घोषणा हुई, उनमें से एक का भी काम पूरा नही हुआ है

मई 2018 में अपनी चौथी सालगिरह से ऐन पहले, मोदी कैबिनेट ने देश में 20 नये एम्स यानी आखिल भारतीय चिकित्सा संस्थान बनाने का ऐलान किया. इससे पहले मोदी राज के गुज़रे चार सालों में 14 एम्स बनाने की घोषणा हो चुकी थी. इसकी प्रगति के बारे में सूचना के अधिकार के तहत जून 2018 में मोदी सरकार ने बताया कि 13 में से एक भी एम्स शुरू नहीं हो पाया है!'

जैसे ये आज IIT के बारे में मोदी ट्वीट कर रहे हैं वैसे ही 2018 में उन्होंने एम्स के बारे मे ट्वीट किया था कि 'परिवार राज से स्वराज- 2014 तक 7 एम्स स्थापित किये गये, लेकिन मोदी सरकार के 48 महीने में 13 एम्स जैसे संस्थाओं को मंज़ूरी दी है। मंज़ूरी देने में क्या लगता है तेरह की जगह 1300 ही दे दो।

जबकि 2014 के बाद की एक भी घोषणा 6 साल बाद हकीकत के धरातल पर नही उतर पायी है 7 अगस्त, 2018 को राज्यसभा में सांसद अहमद पटेल के एक सवाल के जवाब में सरकार ने बताया था कि इन एम्स में तो अभी तक काम ही चालू नही हुआ है जबकि अधिकतर एम्स को चालू करने का साल 2020-21 ही है

अब ये नया फंडा ले आए हैं कि हम IIT बना रहे हैं फिर बोलेंगे हम IIM बना रहे हैं दरअसल ये कुछ भी नही बना रहे ये देश की जनता को मूर्ख बना रहे है। गौरतलब है कि इनसे न तो मौजूदा एम्स, न ही मौजूदा आईआईटी, आईआईएम चल पा रहे हैं। 'धनाभाव' के चलते इन सभी संस्थानों में 25 प्रतिशत से 50 प्रतिशत तक के पद खाली पड़े हुए हैं।

- गिरीश मालवीय

श्रम

1977-80 के दौरान शिखर पर पहुंची एचएमएस सीटू आज रसातल की ओर क्यों

सतीश कुमार

इन्दिरा गांधी द्वारा थोपी गयी इमरजेंसी के बाद 1977 में जनता पार्टी की हुकूमत आने के बाद थोड़ी बहुत बढ़त तो एटक व बीएमएस ने भी ली थी परन्तु एचएमएस व सीटू ने अत्यधिक बढ़त बनाई थी। जाहिर है इसके पीछे जनता पार्टी हुकूमत में शामिल राजनीतिक पार्टियों में से किसी न किसी का इन ट्रेड यूनियनों को प्रत्यक्ष समर्थन एवं संरक्षण प्राप्त था। लेकिन एचएमएस व सीटू को मिली अधिक बढत के पीछे उनके पास बड़ी यूनियनों का होना था। एचएमएस के पास जहां एस्कॉर्टस जैसी बड़ी भारी भरकम यूनियन थी तो सीटू के पास गेडोर यूनियन थी। गेडोर यूनियन बेशक एस्कॉर्टस यूनियन के एक चौथाई के बराबर थी, लेकिन सीटू के पास गेडोर के अलावा और भी कई अच्छी इकाइयों के साथ-साथ अनुभवी कैडर और एक ठोस विचार धारा भी थी। इसके अलावा सीटू का संगठन एचएमएस की अपेक्षा, इस शहर में काफ़ी पुराना भी था; इस नाते जड़ें गहरी थीं।

सीटू तो फ़िर भी जैसे-तैसे अपने दम पर खड़ी है, लेकिन एचएमएस सड़क पर आ गई है

लेकिन आज दोनों के हालात पतले हैं। सीटू तो फ़िर भी जैसे-तैसे अपने दम पर खड़ी है, उठने-बैठने को अपना ठौर-ठिकाना कहे जाने वाला दफ़्तर है। बेशक वह शहर की किसी प्राइम लोकेशन पर न होकर बसेलवा कॉलोनी में है, पर है तो सही, एचएमएस के पास तो वह भी नहीं। इसका मूल कारण है कि सीटू ने विभिन्न कारखानों में अपनी इकाइयां खड़ी करके उन्हें नेतृत्व प्रदान किया जबकि एचएमएस को खुद एस्कॉर्ट यूनियन ने गोद लिया। इस नाते एचएमएस का नेतृत्व भी सदैव एस्कॉर्ट यूनियन नेताओं के हाथ में रहा। एचएमएस का दफ्तर भी शुरू से लेकर गत वर्ष तक एस्कॉर्टस यूनियन के दफ़्तर में ही चलता रहा। इन हालात में एचएमएस का अपना कोई नेतृत्व विकसित हो ही नहीं पाया। एचएमएस जो भी संघर्ष चलाती व जीतती वह एस्कॉर्टस के खाते में ही लिखा जाता रहा। इसके पीछे एस्कॉर्टस यूनियन द्वारा एचएमएस को दिया जाने वाला वह मासिक चंदा भी रहा है जो तमाम यूनियनों द्वारा दिये जाने वाले कुल चंदे से भी कहीं ज्यादा होता है। अब यह तो पुरानी कहावत है कि बटुआ घर को नियन्त्रित करता है यानी जो पैसा देगा वह चौधर भी करेगा ही।

कहने भर को एचएमएस राज्य इकाई प्रधान स्वर्गीय रामकृष्ण सहगल तथा ज़िला इकाई के प्रधान पहले कामरेड दिलीप सिंह व बाद में नागेश बने। लेकिन वास्तविक नियन्त्रण एस्कॉर्टस यूनियन के प्रधान सुभाष सेठी के हाथ में ही रहा। उनके बाद जो भी एस्कॉर्टस यूनियन का प्रधान होता गया एचएमएस पर उसका ही नियंत्रण चलता रहा। चलता भी क्यों नहीं जब सदस्य संख्या व धन बल उनके पास होने के साथ-साथ दफ़्तर की जगह भी उन्होंने ही दे रखी थी तो नियंत्रण तो होना ही था। लेकिन गत वर्ष यह तालमेल यानी एचएमएस व एस्कॉर्ट यूनियन का यह रिश्ता भी चरमरा कर टूट गया। एस्कॉर्टस यूनियन ने एचएमएस को अपनी इमारत से बाहर का रास्ता ठीक ऐसे दिखा दिया जैसे किसी शरणार्थी को, मकान मालिक द्वारा उठा कर बाहर फ़ेंक दिया जाता है। तब से एचएमएस का दफ़्तर एस्कॉर्टस यूनियन दफ़्तर के सामने पुल के नीचे चल रहा है। दस फ़ीट जरब दस फ़ीट का यह कमरा भी 6500 रुपये मासिक किराये पर लिया गया है जिसे खाली कराने के लिये कमरा मालिक दबाव दे रहा है। इतना ही नहीं एस्कॉर्टस यूनियन से मिलने वाला 6000 रुपये मासिक का चंदा भी बंद हो गया।

भले वक्तों में यानी सेठी के जमाने में यह चंदा 12000 मासिक हुआ करता था। बीच में एक बार भूपेन्द्र सिंह एस्कॉर्ट यूनियन प्रधान बने तो इस चंदे को बंद कर दिया गया। करीब 6 साल बंद रहने के बाद, जब एसडी त्यागी प्रधान बने तो यह चंदा फ़िर से शुरू तो हुआ लेकिन 12000 की जगह मात्र 6000 रुपये, लेकिन बीते बरस जब वज़ीर सिंह डागर प्रधान थे तो एचएमएस को दफ़्तर से बाहर करने के साथ-साथ एचएमएस को मिलने वाला 6000 का चंदा भी बंद कर दिया गया। इसके पीछे एचएमएस का एक धड़ा डागर का भाजपा प्रेम देखता है। विदित है कि डागर भाजपा के सक्रिय कार्यकर्ता है तथा इस बार भाजपा की ज़िला इकाई के प्रधान बनने की दौड़ में भी थे। लेकिन डागर इस आरोप का खंडन करते हैं। उनका कहना है कि वे बेशक भाजपा से जुड़े हैं लेकिन एचएमएस से उनका कोई विरोध नहीं। पूछे जाने पर उन्होंने स्पष्ट किया कि उनके दफ़्तर में बैठ कर और उनसे चंदा लेकर जब कोई उनकी ही जड़ काटेगा तो कैसे कोई बर्दाश्त करेगा? विस्तृत विवरण देते हुए उन्होंने बताया कि उनकी यूनियन से जुड़े प्लांट में समानांतर यूनियन खड़ी करने के प्रयास में जिस रजिस्ट्रेशन के लिये श्रम विभाग में आवेदन किया गया था, उस आवेदन में उन्हीं के दफ़्तर का पता दिया गया था। ऐसे भीतरघात को भला कैसे सहन किया जा सकता था। डागर के मुताबिक एचएमएस दफ़्तर के बहाने उनके विरोधी गुट के लोग मुख्यतया एसडी त्यागी व सुरेन्द्र लाल तथा उनके लगुए-भगुए दफ़्तर में आकर उनके विरूद्ध साजिश रचते थे, इसलिये उन्होंने एचएमएस दफ़्तर को ही अपने यहां से बाहर कर दिया।

संदर्भवश यह जान लेना भी जरूरी है कि एस्कॉर्टस यूनियन के प्रधान रह चुके एसडी त्यागी के रिटायर होने के बाद पहले मूल चंद प्रधान बने, उसके बाद जब डागर चुनाव में खड़े हुए तो एसडी त्यागी ने डागर की खिलाफ़त करके हरवाया। अगली बार त्यागी के पुरज़ोर विरोध के चलते डागर प्रधान चुने गये। इस विषय में डागर का मानना है कि त्यागी जैसे वरिष्ठ एचएमएस नेता जो राज्य इकाई के प्रधान तथा राष्ट्रीय कार्यकारिणी के सदस्य हैं, इस तरह की ओछी भूमिका नहीं निभानी चाहिये थी। उनके लिये सभी उम्मीदवार बराबर होने चाहिये थे। लेकिन इस तरह की ओछी भूमिका निभा कर उन्होंने एस्कॉर्ट श्रमिकों में धड़ेबंदी को बढावा देकर अपना रूतबा भी घटा लिया है। दूसरी ओर त्यागी इस आरोप का खंडन करते हैं।

इस धड़ेबंदी के चलते एस्कॉर्टस यूनियन का एक धड़ा चुनाव कराने को लेकर पंजाब एंड हरियाणा हाई कोर्ट तक भी जा पहुंचा था। हुआ कुछ यूं था कि मई 2019 में यूनियन प्रधान डागर के नेतृत्व में प्रबन्धन से त्रिवर्षीय समझौता वार्ता चल रही थी तो प्रधान एवं कार्यकारिणी की समयावधि समाप्त हो गयी थी। नये चुनावों को समझौतावधि तक टालने के लिये श्रमिकों की आम सभा ने प्रस्ताव पास कर दिया। लेकिन दूसरे धड़े को यह बात हजम नहीं हुई और लाखों रुपये खर्च करके हाई कोर्ट से तुरन्त चुनाव कराने का आदेश ले आये। बेशक इस मुकदमे में यूनियन के भी लाखों खर्च हो गये और चुनाव भी कराना पड़ा। चुनाव हो गया लेकिन डागर ने पहले से भी 100 वोट अधिक लेकर चुनाव कराने वालों के मुंह पर करारा तमाचा जड़ दिया। वह बात अलग है कि डागर दोबारा प्रधान बनने के बावजूद समझौता वार्ता पूरी नहीं कर पाये क्योंकि कुछ माह बाद वे रिटायर हो गये। उनके रिटायर होते ही पूरी कार्यकारिणी स्वत: भंग हो गयी। कुछ समय बाद फ़िर से चुनाव हुए पूरी कार्यकारिणी फ़िर से बनी। समझौता वार्ता फ़िर से चली। समझौता भी हुआ लेकिन इस समझौते में उतना नहीं मिल सका जितना डागर के समय मिलने जा रहा था।

यहां गौरतलब बात यह है कि एक जमाना वह भी था जब यूनियन नेता का पता ही नहीं चलता था, छिप-छिप कर यूनियन का गठन किया जाता था और एक जमाना यह आ गया कि यूनियन कब्ज़ाने के लिये लाखों खर्च करके कोर्ट का सहारा लेने में भी कोई शर्म महसूस नहीं होती। जाहिर है अब यूनियन नेता बनने के पीछे निजी एवं निहित स्वार्थ हावी होने लगे हैं।

(सम्पादक : मजदूर मोर्चा)